ISSN 2349-137X
UGC CARE-Listed, Peer Reviewed Journal

अनहद लोक

वर्ष-8, अंक-16, 2022
(जुलाई-दिसम्बर)

प्रतिध्वनि कला संस्कृति की

ISSN 2349-137X
UGC CARE-Listed Peer Reviewed

अनहद लोक

(प्रतिध्वनि कला एवं संस्कृति की)

वर्ष-8, 2022, अंक-16
(जुलाई - दिसम्बर)
(अर्धवार्षिक शोध पत्रिका)

सम्पादक

डॉ॰ मधु रानी शुक्ला

सम्पादक मण्डल

डॉ॰ राजश्री रामकृष्ण, डॉ॰ मनीष कुमार मिश्रा,
डॉ॰ धनंजय चोपड़ा, डॉ॰ ज्योति सिन्हा

सह सम्पादक

सुश्री शाम्भवी शुक्ला

व्यंजना

आर्ट एण्ड कल्चर सोसाइटी
109 डी/4, अबुबकरपुर, प्रीतम नगर, सुलेम सरांय
प्रयागराज - 211011

अनहद लोक

(प्रतिध्वनि कला एवं संस्कृति की)

सम्पादक : डॉ॰ मधु रानी शुक्ला
सम्पादक मण्डल : डॉ॰ राजश्री रामकृष्ण, डॉ॰ मनीष कुमार मिश्रा, डॉ॰ धनंजय चोपड़ा, डॉ॰ ज्योति सिन्हा
सहायक सम्पादक : सुश्री शाम्भवी शुक्ला
मल्टीमीडिया सम्पादक : श्रेयस शुक्ला

प्रकाशक :
व्यंजना (आर्ट एण्ड कल्चर सोसाइटी)
109 डी/4, अबुबकरपुर, प्रीतम नगर
सुलेम सरांय, प्रयागराज - 211 001
मो॰ : 9838963188, 8419085095
ई-मेल : anhadlok.vyanjana@gmail.com
वेबसाइट : vyanjanasociety.com/anhad_lok
वितरक : पाठक पब्लिकेशन, महाजनी टोला, प्रयागराज - 211 011
फोन : 0532-2402073

मूल्य : 300/- प्रति अंक, पोस्टल चार्जेज अलग से
सदस्यता शुल्क
वार्षिक : 700/-
तीन वर्ष : 2,100/-
आजीवन : 15,000/-

संगीत नाटक अकादेमी के सहयोग से प्रकाशित

© सर्वाधिकार सुरक्षित
- रचनाकारों के विचार मौलिक हैं
- समस्त न्यायिक विवाद क्षेत्र इलाहाबाद न्यायालय होगा।

मुद्रक :
गोयल प्रिन्टर्स
73 A, गाड़ीवान टोला, प्रयागराज
फोन - 0532-2655513

मार्गदर्शन बोर्ड :

डॉ॰ सोनल मानसिंह, पं॰ विश्वमोहन भट्ट, प्रो॰ कमलेश दत्त त्रिपाठी, प्रो॰ ऋत्विक् सान्याल, प्रो॰ चित्तरंजन ज्योतिषि, पं॰ रोनू मजुमदार, पं॰ विजय शंकर मिश्र, प्रो॰ दीप्ति ओमचारी भल्ला, प्रो॰ के॰ शशि कुमार, प्रो॰ (डॉ॰) गुरप्रीत कौर, डॉ॰ राजेश मिश्रा, डॉ॰ आशा अस्थाना

सहयोगी मण्डल :

प्रो॰ संगीता पंडित, प्रो॰ लावण्य कीर्ति सिंह 'काब्या', प्रो॰ निशा झा, प्रो॰ प्रभा भारद्वाज, प्रो॰ नीलम पॉल, प्रो॰ अर्चना अंभोरे, डॉ॰ राम शंकर, डॉ॰ इंदु शर्मा, डॉ॰ सुरेन्द्र कुमार, प्रो॰ भावना ग्रोवर, डॉ॰ अंबिका कश्यप, डॉ॰ स्नेहाशीष दास, डॉ॰ सुजाता व्यास, डॉ॰ शान्ति महेश, डॉ॰ कल्पना दुबे, डॉ॰ बिन्दु के॰

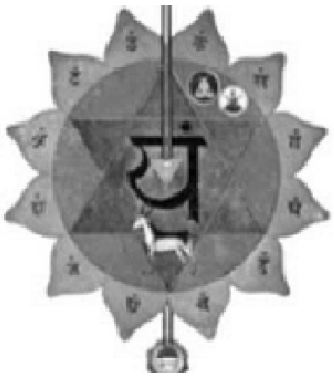

सम्पादकीय

अनहद लोक अंक-16 आप सभी के शुभ हाथों में सौपतें हुए अत्यन्त हर्ष का अनुभव हो रहा है, मैं समस्त लेखकों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करती हूँ, जिन्होंने अपने शोध परक एवं सारगर्भित लेखों से इस अंक को समृद्ध किया है तथा त्रुटियों के लिए सभी पाठकों से क्षमा माँगती हूँ।

ललित कलाओं में काव्य तथा संगीत दोनों का विशिष्ट स्थान है, शब्द अर्थात् ध्वनि एवं जिसका संगीत में अनुरणन होता है। छन्द जो ताल के रूप में प्रतिष्ठित होता है तथा पद की व्यंजना अर्थ निष्पत्ति कराती है और समग्र रूप से ये तीनों ही रस निष्पत्ति करते हैं।

हिन्दी के घटक तत्व व्याकरण काव्य तथा साहित्य तीनों के साथ संगीत के माध्यम से रोजगार की उपलब्धता सम्भव है किन्तु जिस गति से तकनीकि तथा सूचना क्षेत्रों में बदलाव आ रहा है उसकी तुलना में साहित्य, संगीत में मन्थर गति है। दोनों विषयों के माध्यम से व्यवसाय तक पहुँचने की प्रक्रिया में सर्वप्रथम हमें शिक्षण के प्रारूप में आमूल परिवर्तन की आवश्यकता है अब केवल विषय विशेष में ज्ञान से ही पूर्ण रूपेण सफलता की आशा नहीं की जा सकती क्योंकि विषय पढ़कर कोई कवि, साहित्यकार कलाकार बन जाये यह सम्भव नहीं, जब तक उसको विशेष प्रशिक्षण न दिया जाए। यद्यपि कलाओं की व्यवसायिकता सदैव आलोचना का पात्र रही है तथापि कलाओं के संरक्षण-संवर्धन की दृष्टि से कला को व्यवसायिक रूप प्रदान करना वर्तमान समय की माँग है तभी भावी पीढ़ी इस ओर उन्मुख होगी, क्योंकि सात-आठ साल विषय को समर्पित विद्यार्थी के आगे हम अन्धकारमय भविष्य रखें यह कहाँ तक उचित है ? अतः साहित्य, संगीत के साथ योग, कम्प्यूटर, पत्रकारिता, लेखन, मुद्रण, प्रकाशन आदि क्षेत्र का विशिष्ट प्रशिक्षण विषय विशेष को व्यावसायिक रूप से समृद्ध बना देगा। साहित्य, संगीत के माध्यम से अनेक व्यवसाय हो सकते हैं सर्वप्रथम विषय की विशिष्टता के आधार पर कवि, साहित्यकार व कलाकार तो बन ही सकते हैं, यदि विद्यार्थी में प्रतिभा तथा सही मार्ग दर्शन के साथ प्रारब्ध हो तो जो इस श्रेणी में नहीं आते उनके लिए आगे भी आपार सम्भावनाएँ हैं।

गीतकार-गायन, राग की शुद्धता, नियमबद्धता, सहजता, सरसता एवं चलन से प्रतिष्ठित होता है बन्दिशों के साहित्य का भी समान महत्व है किन्तु शास्त्रीय संगीत घिसे-पिटे शब्दों (सजनवा, बलमवा, पियरवा आदि) पार्श्व गायन में स्तरहीन शब्दों ने जहाँ संगीत के स्तर को गिरा दिया है, वहीं सामाजिक क्षरण भी किया है, अतः आवश्यकता है कि अर्थहीन, द्विअर्थी शब्दों, वाक्यों का बिखराव, शब्दों के अनावश्यक कर्षण को त्याग कर अच्छे साहित्य का सृजन कर मधुर, भावपूर्ण संगीतबद्ध कर समाज को दे सकते हैं।

रचनाओं का सृजन शास्त्रीय, उपशास्त्रीय लोक संगीत, पार्श्व संगीत, थियेटर संगीत, बच्चों के गीत, एनिमेशन फिल्म, जिंगल्स, वृन्दगान, देशभक्ति गान, भक्ति गान, ऋतु गीतों आदि में सम्भव है। शास्त्रीय संगीत के लिए 'काव्य' रचना के साथ ही अगर संगीत का ज्ञान भी है तो लिखे हुए 'शब्दों' को पुस्तक के रूप में प्रकाशित करें क्योंकि शास्त्रीय संगीत, विद्यार्थियों को 'कम्पोजिशन' करना होता है और सभी से काव्ययित्रि प्रतिभा सम्भव नहीं अतः यह संगीत के विद्यार्थियों के लिए सुगम तथा साहित्यधर्मियों के लिए व्यवसायिक रूप से समर्थ होगा।

सत्यता यह भी है कि नित नवीन शब्दों की खोज प्रायः सभी संगीतज्ञों को होती है अतः 'गेयपद' का संग्रह संगीतज्ञों के लिए उपयोगी होगा। हिन्दी के सहयोगी भाषाएँ ब्रज, अवधी, भोजपुरी, मगही आदि के सहयोग से निर्मित रचनाएँ सुगम संगीत तथा लोक संगीत के लिए उपयोगी सिद्ध होगी। इनका उपयोग करने वाला एक बड़ा वर्ग है। रिकॉर्डिंग कम्पनियों से कान्ट्रैक्ट के आधार पर भी गीत लिख सकते हैं। इसके अतिरिक्त कवि यदि सांगीतिक क्षमता भी रखता है तो वह श्रेष्ठ कवि बनकर अर्थोपार्जन कर सकता है। इसके अतिरिक्त जिनमें संगीत ज्ञान के साथ ही साहित्य प्रतिभा हो वो विभिन्न वर्गों में कार्य करके व्यवसायिक रूप से समर्थ हो सकता है।

शास्त्रकार - संगीत शास्त्र में वर्णित सिद्धान्तों का विश्लेषण, व्याख्या, टीका आदि।

लेखक - संगीत के सभी विधाओं (शास्त्रीय, उपशास्त्रीय, सुगम आदि) के विविध पक्षों पर लेखन।

अनुवादक - हिन्दी, संस्कृत, अंग्रेजी भाषाओं के ज्ञान के साथ ग्रन्थों का ज्ञान तथा अनुवाद संगीत जगत के लिए अमूल्य योगदान होगा। इसके अतिरिक्त कम्प्यूटर तकनीकि के प्रयोग से उसे अन्य भाषाओं में अनुवादित कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त यदि संस्कृत का ज्ञान भी है तो मूल ग्रन्थों की टीका भी लिख सकते हैं।

प्रकाशन - विभिन्न लेखकों के ग्रन्थों का प्रकाशन, मुद्रण, प्रूफ रीडिंग आदि सही प्रकार से होने में दोनों ही विधाओं का ज्ञान उपयोगी होगा तथा सम्मानित व्यवसाय के रूप में प्रतिष्ठित होगा।

पत्रकारिता - पत्रकारिता के क्षेत्र में सम्पादन, समीक्षक, पत्रकार आ सकते हैं।

सम्पादन - संगीत की पुस्तकों, मासिक, त्रैमासिक, अर्धवार्षिक, वार्षिक पत्रिकाओं का सम्पादन, रिसर्च जर्नल्स का सम्पादन आदि करके अर्थोपार्जन की प्रबल सम्भावना है। इसके साथ ही कलाकारों का जीवन परिचय, साक्षात्कार आदि दोनो ही, संगीत सम्बन्धी विशिष्ट लेख, सामान्य जनमानस को विषय से जोड़ने हेतु लेख आदि विभिन्न प्रतिष्ठित पत्र-पत्रिकाओं के साथ ही दैनिक समाचार पत्रों के कॉलम तक में उपयोगी हो सकते हैं।

समीक्षक - पुस्तक समीक्षा, संगीत कार्यक्रमों की समीक्षा, फिल्मी गीत-संगीत, कहानी, अभिनय की समीक्षा आदि व्यवसायिक रूप से प्रतिष्ठित करा सकते हैं। इसके पश्चात् हिन्दी साहित्य, संगीत के साथ ही यदि कम्प्यूटर ज्ञान भी हो तो वेबसाईट आदि का निर्माण क्षेत्र में भी कार्य कर सकते हैं।

संगीत विपणन (Music Marketing) :

व्यवसाय के क्षेत्र में यह बहुत ही सफल कार्यक्षेत्र माना जाता है, कहाँ-किस संगीत की आवश्यकता है, शास्त्रीय संगीत, सुगम संगीत तथा भक्ति संगीत, सूफी संगीत, लोक संगीत की नैसर्गिक गुण को सुरक्षित रखते हुए बदलते परिवेश के अनुरूप उसे समझकर जनमानस का पोषक आहार बनाने के साथ ही अर्थोपार्जन का जरिया भी बन सकता है, इसके लिए आवश्यक है विषय ज्ञान तथा विश्लेषणात्मक प्रवृत्ति। मीडिया पार्टनर तथा पी0 आर0 एजेन्सी कौन है, इसका भी ध्यान रखना होगा।

सूचना प्रौद्यिगिकी, कम्प्यूटर प्रौद्यिगिकी तथा उच्च क्षमता वाले इलेक्ट्रानिक यंत्रों से सुसज्जित मीडिया ने मानव जीवन के सभी पहलुओं को व्यापक रूप से प्रभावित किया है, तो उससे साहित्य संगीत भी अछूता नहीं रहा। आज से दो दशक पहले रोजगार के विकल्प सीमित थे, परन्तु आज मीडिया ने रोजगार के नए विकल्प उपलब्ध करा दिये हैं रेडियों-वीडियो जॉकी, उद्घोषक का कार्य भी व्यवसाय की दृष्टि से समर्थ तत्व है, इसके लिए विषय ज्ञान, भाषा की पकड़, उच्चारण शुद्धता, माईक सेटिंग आवाज, प्रत्युत्पन्न गति, विश्लेषणात्मक प्रवृत्ति आवश्यक है। रेडियों, टी0 वी0 में स्टाफ के अतिरिक्त कभी-कभी साक्षत्कार के लिए इन गुणों से सम्बन्धित व्यक्तियों को विशेष रूप से आमंत्रित किया जाता है। आज कल शास्त्रीय, उपशास्त्रीय, सुगम संगीत के महोत्सवों के साथ ही पॉप नाईट, रॉक नाईट आदि कार्यक्रमों में भाषा ज्ञान के साथ ही 'विधा विशेष' की जानकारी वाले उद्घोषकों की बहुत माँग है।

अतः अर्थोपार्जन के लिए इस विधा का चयन भी कर सकते हैं। इनके साथ ही संगीत समारोह संयोजक, संगीत संयोजक, संगीत चिकित्सक, रिएलिटी शो संयोजक, विज्ञापन उद्योग में, आडियो-वीडियों, सीडीज के निर्माण तथा निर्देशन में व्यवसाय के विभिन्न माध्यम हो सकते हैं, सभी विद्यार्थियों में एक ही गुण नहीं हो सकता, अतः मार्गदर्शक का नैतिक दायित्व बनता है कि विद्यार्थी के विशिष्ट गुण को पहचान कर उसे उसी विधा की ओर जाने के लिए प्रेरित करें, जिसमें उसका भविष्य व्यवसायिक रूप से सुरक्षित हो सकता है तथा विद्यार्थियों से अपेक्षा है कि वो अपने स्वभाव, क्षमता के अनुरूप उचित विधा का चयन करके स्वयं को तनाव से मुक्त रखने के साथ ही जो विषय (साहित्य-संगीत) उपेक्षित होते जा रहे हैं, उनके संरक्षण, संवर्धन में अमूल्य योगदान दें।

डॉ॰ मधु रानी शुक्ला

अनुक्रम

गान

1. शास्त्रीय संगीत के प्रमुख घरानें — *डॉ॰ गीता शर्मा* — 3

2. Story elements and thematic story representations found in the Sanskrit Musical compositions composed by Maharaja Swathi Tirunal on Lord Krishna — *Sunil Kumar M P* — 9

3. भारतीय संगीत में ठुमरी गायन : एक अध्ययन — *दीपक वर्मा* — 16

4. Evolution and Correlation of Manipuri Dance and Music — *Wahengbam Debina Devi, Dr. Laimayum Subhadra Devi* — 20

5. Analytical study on the composition- 'Nandhakishoram' by Thrissur C Rajendran in theraga Brindavani — *SRUTHY.K, Dr. V. Janaka Maya Devi* — 24

आतोद्य

6. भरतमुनिकृत नाट्यशास्त्र में ताल की अवधारणा : एक दर्शनपरक दृष्टि — *डॉ0 सुनीता द्विवेदी* — 33

7. उस्ताद विलायत खां साहब की वादन शैली : एक अध्ययन — *डॉ. सर्वजीत कौर* — 38

8. सरोद की उत्पत्ति विदेशी वाद्य से : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन — *डॉ0 कृष्णा बाला सिंह* — 43

9. भारतीय वाद्य यंत्र का मानव जीवन पर प्रभाव — *मनीष कुमार* — 48

थाती

10. आदिवासी लोक नाट्य — *डॉ॰ बन्ना राम मीना* — 55

11. भारतीय लोक संगीत में विद्यमान बॉसुरी प्रकार — *डॉ॰ नीमा कलौनीं* — 60

12. THABAL – LIROL ISEI : A Traditional Manipuri Music — *Dr. Laimayum Subhadra Devi* — 64

13. भारतीय लोककला की आधारभूत विशेषताएं — *डॉ. रचना पांडेय* — 70

14. Journey ofTraditional Singing Practices of the Muslims ofManipur — *Kshetrimayum Alexander Singh, Dr. Laimayum Subhadra Devi* 74

15. Traditional Mask Making: A Cultural Practice In Assam With Special Reference To Majuhli — *Dr. Binoy Paul* 78

16. पद्मा सचदेव की रचनाओं में कश्मीर की कला और संस्कृति का वर्णन — *शाश्वत आनंद* 83

17. झारखंड : आदिवासी लोक संस्कृति और साहित्य — *राकेश कुमार, सुचेता सेन चौधुरी* 87

सौन्दर्य

18. अजंता की कलात्मक विरासत एक काव्यात्मय रचना — *आनंद शत्रुघ्न प्रताप* 95

19. मन्दिर वास्तुकला निर्माण में क्षेत्रीय शैलियो का विकास — *डॉ. निजानन्द यादव, डॉ. मनोज सिंह यादव* 100

20. Multi-Faceted Cannotations of Ashtanayikas in Art — *Amisha Singh* 106

21. Role of Moibung in Astakal of Shree Shree Govindajee Temple — *Chakpram Narendra Singh, Dr. Laimayum Subhadra Devi* 112

22. संस्कृत नाटकों में स्त्री चेतना का विकास — *गुलिस्ता, डॉ॰ हिमांशु द्विवेदी* 116

23. Depiction of Ragmala in Kangra Miniature Painting — *Prosenjit Raha* 120

24. Thingalur Chandranar Temple Chola's Period A Study — *S. Chandra Mohan, Dr. V. Vivek Anandam* 125

25. आधुनिक समय में ऊभरती वर्ली लोक कला — *वर्षा* 134

साहित्यिकी

26. Cultural Connetion of Africa in the Poetry of Edward K. Brathwaite — *Dr. Shaili Gupta* 141

27. Regional Divisions of Ancient India : Perspectives From Kalidasa's Reguvamsa — *Dr. Krishnakumar A.* 148

28. दक्खिनी भाषा और साहित्य — *डॉ॰ नूर जाहान रहमातुल्लाह* 154

29. 'गोदान : किसान के भूमिहीन बनने की प्रक्रिया का उद्‌घाटन' — *डॉ॰ पायलदीप, गुरप्रीत सिंह* 159

30. पंकज सुबीर की कहानियों में समकालीन परिदृश्य — *समिति शर्मा, डॉ॰ वंदना शर्मा* 164

31. A Realistic Analysis of Select Short Stories of Manu Bhattathirifrom the Collection Savithri's Special Room and Other Stories — *Vaishnavi S, Ms. Akila J* 169

32. हरिशंकर परसाई तथा लतीफ़ घोंघी के व्यंग्य साहित्य में सामाजिक संघर्ष — *भुवनेश्वर पटेल, डॉ. गिरधारी लाल लोधा* 174

संस्कृति

33. भारतीय संस्कृति एवं धर्म में कला का महत्व — *डॉ॰ कंचन मैनवाल* 183

34. दशम ग्रन्थ का आलोचनात्मक अध्ययन — *डॉ. हरजिंदर कौर* 188

35. ''संगीत के अवबोध में वेदों एवं शिक्षा ग्रन्थों की उपादेयता'' — *डॉ॰ अमित कु॰ शुक्ल* 194

36. दीपशिखा टीका में ध्वनि का वास्तविक स्वरूप — *डॉ. स्मिता अग्रवाल* 200

37. Bloom's Taxonomy : It's Relevance in Music Education — *Dr. Arati Mishra, Dr.Sweta Dvivedi, Dr. Nitu Kaur* 204

38. संगीत चिकित्सा में मंत्रों का महत्व — *डॉ॰ प्रीति गुप्ता* 209

39. एम. एफ. हुसैन : सृजन या विवाद के प्रणेता — *शालिनी तिवारी* 214

40. मेघदूत : आधुनिक भारतीय चित्रकारों की दृष्टि में — *मिठाई लाल* 218

41. संगीत एवं योग का सामाजस्य — *गुरदीप सिंह संधु* 226

42. साहित्य एवं संगीत का अन्तः सम्बन्ध — *अमित कुमार शर्मा* 231

43. मतंगकृत बृहद्देशी ग्रन्थ में वर्णित संगीत विषयक अवधारणाओं का विश्लेषणात्मक अध्ययन — *शिखा श्रीवास्तव, डॉ. वन्दना जोशी* 234

44. वेदों में समाहित भारतीय संस्कृति — *राजेश कुमार* 237

45. Lady Ahalya : In the Light of the Bhakti Concept of Earthly vs. Divine Love — *Bhagyalakshmi R Nair, Dr. Shibani Chakraverty Aich* 244